

## मेरा गांडू जीवन

“मैं अपने पुराने शहर में कम उम्र से ही गांड मराने का शौकीन हो गया। असल में पहले तो मेरे मोहल्ले/स्कूल के मेरे से बड़ी उम्र के चालू लौंडों ने मेरी ही मारी, कुछ ने पटा कर मेरी गोरी चिकनी गांड में अपना लंड पेल दिया. पढ़ कर देखें!...”

Story By: Achyut Thaker (achyut505@yahoo.in)

Posted: Tuesday, February 20th, 2018

Categories: [गे सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [मेरा गांडू जीवन](#)

# मेरा गांडू जीवन

दोस्तो, मैं फिर हाजिर हूँ अपनी नई कहानी लेकर !

मैं तब लगभग बाइस तेइस साल का रहा होऊँगा अपने शहर से बी एस सी पास करके एक बड़े शहर ग्वालियर में आ गया ।

दोस्तो मैं अपने पुराने शहर में कम उम्र से ही गांड मराने का शौकीन हो गया । असल में पहले तो मेरे मोहल्ले/स्कूल के मेरे से बड़ी उम्र के चालू लौंडों ने मेरी ही मारी, कुछ ने पटा कर मेरी गोरी चिकनी गांड में अपना लंड पेल दिया, पहले तो बड़ा दर्द हुआ मोटे मस्त लंड डलवाने में गांड फट जाती थी, एक छोटे चिकने लौंडे की गांड में जिसका छोटा सा छेद हो उसमें कोई बेरहमी से अपना लोहे जैसा सख्त लम्बा मोटा लंड पेल दे और आधा घंटे तक लौंडे को औंधा लेटाए उस पर चढ़ा रहे और गांड में लंड पेले रगड़ता रहे लौंडे के चीखने चिल्लाने की कोई परवाह न करे, लंड की ठोकर पर ठोकर देता रहे तो गांड फट ही जाती है, क्रीम तेल थूक कुछ भी कितना ही लगाएं ज्यादा फर्क नहीं पड़ता.

दो तीन दिन तक गांड दर्द करती रहती, हगना मुश्किल हो जाता, दो दिन बाद दर्द कम होता तब कोई दूसरा लौंडेबाज लौंडा अपना महा लंड पेल देता.

क्या करें पर लौंडे बाज लंड को ऐसे ही माशूक लौंडे पसंद आते हैं, क्या करें, लंड की टक्कर झेलना आसान तो न था पर गांड को आदत पड़ गई गांड मराने में दर्द तो होता ! पर मराते मराते धीरे धीरे आनन्द आने लगा, मैं ज्यादा ही माशूक था और माशूक लौंडों को गांड मराना ही पड़ती है. मेरी क्लास में उस समय जितने भी माशूक थे सभी की मारी गई. मैं गोरा चिकना मस्त लौंडा था, जल्दी पट जाता था.

बाद में जब उमर बढ़ी तो मैं भी अपने साथी उन लौंडों की गांड मारने लगा । बहुत सारे लौंडों से अटा सटा रहा मेरे जो दोस्त पढ़ रहे हैं व जिन्हें गांड मराने का शौक है. वे अपने अनुभव साझा करें व गांड मराने वाला आनन्ददायक समय याद करें ।

अब मैं जवान था, कॉलेज में पढ़ने के साथ साथ मैं कसरत भी करता था, दौड़ता था, योगासन सीख लिए थे, करता था, जांचें व बाहों में मछलियाँ उभर आई थीं. मैं मस्कूलर तो नहीं छरहरे बदन का था लोगों की निगाह में हैन्डसम था, अच्छा कद था, मेरी आकर्षक पर्सनालिटी थी मस्त पर चेहरे से !

अब माशूक था, दोस्त लोग साथी मुझे नमकीन/हेन्डसम कह कर छेड़ते, मेरी चूमा चाटी करते, वे बेचारे नहीं जानते थे कि मैं गांडू भी हूँ, कुछ मेरे पीछे चिपक जाते, अपना उत्तेजित लंड मेरे चूतड़ों के बीच रगड़ते, मुझे मजा आ जाता, मैं मुस्करा देता, अपनी लंड की प्यासी गांड उनके पेंट के अंदर खड़े लंड से चिपकाए खड़ा रहता.

वे मेरी पप्पी लेते लंड के धक्के देते, अपने हाथों से मेरे चूतड़ मसलते, कहते- यार बड़े मस्त हैं !

कभी कभी मैं भी अपनी गांड के धक्के लगा देता, कभी कभी उनका खड़ा लंड मैं भी मसक देता. ऐसा बहुत कम होता पर कभी मैं उनके पीछे चिपक लेता, खड़े लंड का धक्का दे लेता, पप्पी ले लेता, वे प्रसन्न हो जाते, निहाल हो जाते और बस ।

एक दिन क्रिसमस के आसपास का समय था, दिसम्बर में मिड टर्म एग्जाम के बाद अधिकतर स्टूडेंट घर गए थे, हॉस्टल सूना था, इक्का दुक्का ही स्टूडेंट बचे थे. शाम का समय था, अंधेरा घिर आया था, जो थोड़े से थे भी, वे घूमने या कहीं गए थे ।

मैं अपने रूम में था, हॉस्टल में लेट्रिन कम्बाइन ही होती है, मैं लेट्रिन करके लौट रहा था, केवल अंडरवीयर बनियान में था, सोकर उठा था, हाथ में पानी भरी बाल्टी थी, मग था, गले में तौलिया डली थी, साबुन लिए था कि बरांडे में ही एक लड़का मेरी ही उम्र का दिखा. अनजान था, किसी दूसरे कॉलेज का था.

चूंकि सारे ही कमरे बंद थे, उसने पूछा- पंदरह नंबर वाला आत्मा कहां है ?

मैंने कहा- पता नहीं, थोड़ी देर देख लें, आता ही होगा ।

वह मुझे बड़े ध्यान से देख रहा था, फिर बोला- ठीक है।

मैंने कहा- कमरे में चलें ?

वह मेरे साथ आ गया, मेरे रूम में एक चारपाई व एक कुर्सी टेबल मात्र ही थी, वह कुर्सी पर बैठ गया। मैंने बाल्टी रखी, गीले हाथ पैर तौलिया से पौँछने लगा, वह मुझे ध्यान से देख कर बोला- आप बहुत हेन्डसम हो, आप का कलर भी बहुत फेयर है।

मैं उसके पास ही पहुंच गया, टेबल पर से तेल की शीशी लेकर तेल लगा रहा था कि फिर बोला- आपकी जांघें बहुत मस्त हैं, क्या कसरत करते हो ?

फिर वह मेरी जांघों पर हाथ फेरने लगा, वह भी एक खूबसूरत माशूक बंदा था। हां रंग थोड़ा मेरे से दबा था, मेरे से थोड़ा ज्यादा स्लिम था।

मैंने कहा- तुम भी तो माशूक हो ?

वह मुस्कुराया- हां पर आपका जवाब नहीं।

और अपने हाथ मेरी जांघों पर रगड़ना चालू रखा।

मैंने कहा- यार ! बस कर, वरना गड़बड़ हो जाएगी।

वह बोला- क्या गड़बड़ होगी ?

मैंने टालने को कहा- यार हाथ बहुत ठंडे हैं।

पर वह फिर बोला- गड़बड़ क्या होगी ?

तब तक गड़बड़ हो गई, उसके हाथ फेरने से जांघों में ऐसी सनसनाहट हुई कि मेरा लंड खड़ा हो गया। चूंकि केवल अंडरवियर पहने था, अतः साफ दिख रहा था।

वह मुस्कुराया, उसने कहा- अच्छा यह हो गया।

अपने हाथ से मेरे अंडरवियर के ऊपर से लंड सहलाया फिर बोला- मस्त है।

फिर एकदम से हाथ अंदर डाल दिया और लंड बाहर निकाल कर पकड़ लिया बोला- काफी लंबा मोटा है।

उसने लंड मुट्ठी में ले लिया और आगे पीछे करने लगा, मैंने उसकी मुट्ठी से अपना लंड छुड़ाना चाहा कहा- रहने दे।

पर वह पकड़े रहा.

मैंने कहा- अच्छा छोड़, फिर पकड़ना, पहले अपना तो दिखा।

वह कोट पेंट पहने था, अब मुझे याद आया कि सर्दी लग रही है मैंने कहा- कपड़े उतार रजाई में बैठते हैं।

वह मुस्कुराया, कपड़े उतारने लगा.

मैं रजाई ठीक करने लगा तो उसकी तरफ पीठ हो गई। वह कपड़े उतार कर मेरी ओर मुड़ा और मेरे चूतड़ों पर हाथ मारा और बोला- यार तेरे चूतड़ भी बहुत मस्त हैं, मुझे बेईमानी को ललचा रहे हैं।

अब उसका खड़ा लंड उसके अंडरवियर से साफ दिख रहा था, मैंने कहा- तो कर ले जो करना हो, आ जा।

और मैंने उसका हथियार पकड़ कर हिला दिया, हम दोनों रजाई में आ गए, अब वह मेरे से चिपक गया, उसने फिर मेरा लंड पकड़ लिया, हिलाने लगा, मैंने छुड़ाया कहा- झड़ जाएगा, बिस्तर खराब हो जाएंगे।

वह बोला- तो ऐसी जगह पानी निकाल कि बिस्तर खराब न हो!

मैंने कहा- यार सर्दी बहुत है, बाहर नहीं जाऊंगा।

तो वह बोला- बाहर मत जा यहीं झड़।

मैंने कहा- कहां?

वह बोला- मेरी मार ले, गांड में अपना यह मस्त लंड डाल दे, अपना सब माल मसाला उसी में निकाल दे।

और उसने मेरी तरफ पीठ कर ली, खुद ही अपना अंडरवियर नीचे खिसका दिया, मेरा लंड अपने हाथ में लेकर अपनी गांड पर रख दिया.

पर दोस्तो, मैं भी तो गांडू हूँ. तब तक मेरी गांड कुलबुलाने लगी, मैंने उसका हाथ अपने लंड से हटा कर कहा- यार, पहले तू मेरी मार, तब मैं तेरी मारूंगा !

पर वह अपनी गांड मेरे लंड से रगड़ता रहा- यार गर्म हो गई है, डाल दे !

मैं जल्दी से औंधा हो गया, उसने चेहरा मेरी ओर किया, मैंने उसका हाथ अपने हाथ से पकड़ कर अपने नंगे चूतड़ों पर रख दिया, कहा- अभी तू ही तो कह रहा था कि बहुत मस्त है तो चढ़ बैठ रुक मत !

मैंने उसका लंड पकड़ कर हिलाया, उसका एक जोरदार चुम्बन लिया, तब वह माना वह बिस्तर से उठा, उसने तेल की शीशी से अपने लंड पर तेल लगाया, मैं औंधा लेटा था, वह घुटनों से ऊपर बैठ गया, उसने अपना खड़ा लंड मेरी प्यासी गांड लंड को तरसती गांड पर टिकाया, सुपारा अंदर किया, मैंने खुद अपनी गांड उचका कर उसका पूरा अंदर डलवा लिया.

अब वह मेरे ऊपर औंधा लेट गया, वह लंड मेरी गांड में अंदर बाहर करने लगा, बड़े धीरे धीरे धक्के लगा रहा था, उसे अपने लंड पर बड़ा घमंड था, बोला- लग तो नहीं रही ? वास्तव में उसका लंड बड़ा था, मोटा भी था, मेरी गांड को लंड बहुत दिनों बाद मिला, थोड़ी लग भी रही थी, बहुत दिनों बाद गांड मरवा रहा था पर मैं भी महा गांडू था, मैंने गांड उचकाते हुए कहा- यार जोरदार धक्के लगाओ, ये क्या मरे मरे कर रहे हो ?

वह बोला- मेरे लंड के धक्कों से अच्छे, अच्छे लौंडों की गांड फट जाती है, फिर मत कहना, और वह शुरू हो गया, दे दनादन... दे दनादन ! अंदर बाहर... अंदर बाहर ! धक्कम धक्का... धक्कम धक्का !

पूरी ताकत से लगा था, उसकी कमर ऊपर उठती और फिर नीचे आती और लंड मेरी गांड में पूरा पेल देता, मैं भी गांड उचका उचका कर उसका साथ दे रहा था, बार बार गांड ढीली टाइट, ढीली टाइट कर रहा था.

बहुत दिनों बाद लंड के धक्के मेरी गांड पर पड़ रहे थे, वे बड़े जोरदार गांड फाड़ू टक्करें थीं,

टोकरोँ से गांड लाल हो गई, चिनमिनाने लगी पर मजा भी बहुत आ रहा था.

वह बोला- दर्द तो नहीं कर रही ?

मेरे मुंह से आवाजें निकल रहीं थी 'आ आ ई ई ई...'

मैंने गांड टाइट की तो वह बोला- लग रही है ? तुम्हीं कह रहे थे जोर से करो, मजा आयेगा, अब आ आ कर रहे हो... बस थोड़ा और ।

और उसने दो तीन जोरदार टक्करें और दीं फिर चिपक कर रह गया । अब वह झड़ रहा था, फिर हम अलग हो गए, वह मेरे बगल में लेट गया, हम दोनों ही थक गए थे, वैसे ही लेटे रहे, करीब आध घंटे बाद वह नॉर्मल हुआ, अब उसने मेरा लंड फिर पकड़ लिया.

मैं चित लेटा था वह घुटनों के बल उठा और मेरे लंड को अपने मुंह में ले लिया और चूसने लगा. लंड खड़ा हो गया ।

वह बोला- अपना वायदा पूरा करो ।

वह औंधा लेट गया, मैं उसके ऊपर बैठा लंड उसकी गांड पर टिकाया कहा- यार ! थोड़ी टांगें चौड़ी कर ।

उसने टांगें फैलाई, मैंने लंड का सुपारा गांड पर रख कर धक्का दिया, सुपारा अंदर था पर उसने गांड सिकोड़ ली.

मैंने कहा- यार ! बदमाशी नहीं, खड़े लंड पर धोखा नहीं, अभी ढीली रखो ।

वह बोला- यार ! तेरा बहुत बड़ा है ।

मैंने कहा- यार ! तेरा भी तो बड़ा है, मैं पूरा ले गया चुपचाप कि नहीं ? तूने हाथ में लेकर देख लिया, तेरे और मेरे में थोड़ा बहुत ही फर्क है, अब इस समय नखरा नहीं, अंदर तो जाने दे, मजा आएगा. ढीली कर, शुरू में अंदर जाता है तब थोड़ी लगती है ।

तब उसने ढीली की, अब मैंने पूरा पेल दिया, मुझे जल्दी थी, मुझे लगा कि वह जाने कब नखरे करने लगे !

पूरा जाते ही वह चिल्लाया- आ आ बस बस !

मुंह बनाने लगा.

पर मैं शुरू हो गया 'हूं हूं...' मैंने अपना एक हाथ उसकी गर्दन पर लपेट लिया उसका एक जोरदार चुम्बन लेकर बोला- यार ! गांड मराने में थोड़ी तो लगती है तभी तो मजा आता है.

तुम कहो तो बंद कर दूं निकाल लूं ?

एक और चुम्बन लिया वह थोड़ा मुस्कराया. अब उसकी ढीली हो गई थी, दो तीन जोरदार टक्करे दीं, अब वह थोड़ा ढीला पड़ा. मैंने फिर पूछा- निकाल लूं ?

वह बोला- अब कर लो, कितनी देर लगेगी ?

बहुत देर हो गई, गांड जलन कर रही है, मैंने दो तीन धक्के दिए, अंदर बाहर... अंदर बाहर... धच्च फच्च... धच्च फच्च. !

वह फिर 'आ आ ई ई ओ ओ...' करने लगा.

हां, अब उसने टांगें चौड़ी कर लीं, गांड अपने आप लंड की ठोकर से ढीली हो गई, मैंने उसके होंठ चूसने चालू कर दिए, उसकी पीठ पर हाथ फेर रहा था, अब वह शांत था, उसकी गांड अपने आप ढीली कसती, ढीली कसती होने लगी, वह लंड का मजा लेने लगा था.

एक बार और उसके गाल चूमे, ओंठ चूसे, उसके कान में धीरे से कहा- मुस्कुराओ, गांड मराने में मुस्कुराना जरूरी है, वरना मारने वाले का मजा चला जाता है।

उसे मजा तो आ रहा था, गांड मराने का शौक भी था पर नखरा करना उसका स्टाइल था !

इससे मारने वाले में और जोश आ जाता है।

वह मुसकराने लगा बोला- सर, मैंने बहुत लोगों से गांड मरवाई, इतने प्यार से और इतनी देर तक किसी ने नहीं मारी, आपने मजा बांध दिया।

अब मैं झड़ रहा था हम दोनों लेटे रहे।

अब उसे याद आया कि आत्मा के साथ पिक्चर जाना था वह इसी लिए आया था। आत्मा



जिसका सही नाम आत्मदीप था, आया नहीं हम लोगों को देर हो गई, वह बोला- आप ही चलो, दूसरा शो देख लेंगे।

हम दोनों गए, नई सड़क पर टॉकीज थी, लौटते में दाल बाजार में उसके एक परिचित मिल गए, गांव के थे, वे बोले- मेरे कमरे पर चलो!

वह मना कर रहा था।

पर वे ज्यादा कहने लगे तो चले गए. वे हम दोनों से कुछ बड़े थे, सत्ताइस अट्टाइस के होंगे। हम दोनों उनके कमरे पर चले गए. रात के एक बज रहे थे, उनके कमरे में उन्होंने नीचे फर्श पर ही बिस्तर लगा दिए, हम सो गए।

रात को एक दम लगा कि कोई मेरा पेंट खोल रहा है. फिर उसने धीरे से बड़े एक्सपर्ट तरीके से मेरा अंडरवियर नीचे खिसकाया, फिर मुझे लगा कि वह मेरी पीठ से चिपक गया.

मैं समझा कि मेरा दोस्त है, मैं आधी नींद में था, मैं करवट से था.

फिर उसने थूक लगा कर कोई गुदगुदी सख्त सख्त चीज गांड पर रखी, मेरी लंड की टक्करें झेली गांड जल्दी समझ गई कि वह लंड है.

उसने लंड का सुपारा गांड में पेला, सुपारा अंदर डालने के साथ ही उसने अपना एक हाथ मेरी कमर से लपेटा और उसका दूसरा हाथ मेरी गर्दन को लपेटे था और मुझे धीरे से धक्का दे कर ताकत से औंधा कर दिया और वह मेरे ऊपर हो गया.

इसी के साथ उसने मेरी गांड में अपना पूरा लंड पेल दिया. भाई का बहुत मोटा था कि मेरे जैसे पुराने गांडू की भी चीख निकल गई- आ आ ई ई!

तब वह बोला- अरे गलती हो गई!

पर उतरा नहीं, उसने धक्के चालू कर दिए, वह मेरी कमर जोर से पकड़े था व गर्दन भी दूसरे हाथ से लपेटे था गर्दन से हाथ हटा कर!

उसने अब मेरे चूतड़ थपथपाए, जांघें सहलाई, इशारा था, मैंने टांगें चौड़ी कर लीं, वह खुश

हुआ, मेरे कान के पास अपना मुंह ला कर बोला- बड़ी मस्त चीज हो ! बस थोड़ी देर और ढीली करे रहो, लग तो नहीं रही ?

मेरी गांड फटी जा रही थी, बहुत दिनों बाद गांड मराई थी, वह भी एक ही रात में दूसरी बार... गांड गरम हो गई थी, दर्द कर रही थी लग रहा था जैसे छिल गई हो.

पर मजा भी आ रहा था, मैं गांड चलाने लगा, ढीली टाइट... ढीली टाइट...

वह बहुत प्रसन्न हुआ, बोला- वाह दोस्त, पुराने खिलाड़ी लगते हो ! तुम्हारा दोस्त तो मराने में बड़े नखरे करता है.

मैंने पूछा- उसकी कब मारी थी ?

वह बोला- अभी चार दिन पहले !

उसे मेला दिखाने ले गए थे, तब दो बार किया, आज उसी की मारनी थी, तुम गलती से अंटे में आ गए !

उसके धक्के जोरदार हो गए, सही कहूं तो गांडफाड़ हो गए.

बोला- लग तो नहीं रही ?

मैंने कहा- रगड़ दो, कितना दम है !

वह चालू हो गया, लगा कि गांड फाड़ ही डालेगा.

फिर उसकी सांस फूलने लगी, वह जल्दी ही झड़ गया.

सवेरे मेरे से उठा नहीं जा रहा था, मेरा दोस्त मेरी हालत देख कर मुस्कुराने लगा, उसने रात को मेरी गांड मराई देखी थी, मजा लिया ।

बोला- उनका हथियार तो जोरदार है, पर झड़ थोड़ा जल्दी जाते हैं । आपकी जैसी कोई नहीं मारता !

दोस्तो, पर हरदम ऐसा नहीं होता, एक बार मैंने अपने एक दोस्त के कहने से गांड मराई,

आपको बताता हूँ।

मैं तब दतिया शहर में रहता था, मध्य प्रदेश का छोटा सा जिला एक छोटा सा कस्बा था, मैं वहां पढ़ता था, मेरा एक दोस्त था अलीबख्श, वह साहनी मोहल्ले में रहता था, हम दोनों क्लास फेलो थे, वह भी बहुत हसीन था और माशूक था तो जाहिर था लौंडेबाजों ने उसका इस्तेमाल किया था.

एक दिन उसके जीजाजी के छोटे भाई आए, वे झांसी शहर के रहने वाले थे, तब करीब बाइस चौबीस साल के होंगे, गोरे चिट्टे लम्बे स्लिम खूबसूरत थे।

एक दिन वे दोनों सड़क पर मिले पूछा- कहां जा रहे हो ?

तो बोले- आज जीजा जी आए हैं, उन के साथ पुराना महल देखने जा रहे हैं, तुम भी चलो।

मैं साथ हो लिया, हम पुराने महल पहुँचे, वहां ऊपर की मंजिल पर पहुँचे, सुनसान महल... वहां दो लड़के, टीनेजर, एक कमरे से निकले जीजा जी बोले- यह भी घूमने आए हैं पर ये तो लोकल लगते हैं!

हम दोनों हँसने लगे जीजा जी बोले- हंसे क्यों ?

अली बोला- ऐसे ही।

जीजाजी- नहीं, कोई बात तो है बताओ हमें भी तो पता लगे।

हम दोनों मुस्कुरा रहे थे, बताना नहीं चाहते थे, जीजा जी अड़ गए तो मैंने कहा- यहां लोग माशूक नमकीन लौंडो की गांड मारने के लिए उन्हें लाते हैं, उनकी गांड मारते हैं।

जीजा जी हँसने लगे, हम लोग घूमते रहे, शाम होने को थी, मैंने कहा- अब चलें, अब कोई नहीं है।

जीजा जी कुछ सोच कर बोले- तुम दोनों भी तो बहुत माशूक हो, तुमने कभी मराई ?

तीर निशाने पर लगा, हम दोनों ही तब माशूक लौंडे थे, दोनों ही गांड मारते/मारते थे. सही बात तो ये थी कि हम दोनों ने ही एक दूसरे की मारी थी, एक दूसरे से मराई थी, मास्ट्रो से

मरवाई थी और बड़े लौंडो से कई बार मरवा चुके थे. इसी पुराने महल में हमारी गांड में कई बार लंड पेले गए।

हमारी चुप्पी से जीजाजी समझ गए, अब उन्होंने दूसरा सवाल दागा- क्या हमें तुममें से कोई खुश कर सकता है ?

वे मेरी ओर नजरें गड़ाए थे, मैंने कहा- अगर अली करा ले तो मैं करा लूंगा।

मुझे आशा तो नहीं थी पर जीजाजी ने अली की ओर देखा, उन्होंने उसके पास पहुँच कर पूछा, उसके कंधे पर हाथ रखा, फिर मेरी ओर देख कर बोले- कराई है ?

अली ने नजरें झुका लीं तो फिर मेरे से भी हो जाए और उन्होंने उसकी पैन्ट खोल दी, अंडरवियर का नाड़ा खोल दिया.

वह नंगा खड़ा था, उधर पेंट में से जीजाजी अपना लंड निकाल चुके थे, उनका मस्त लम्बा लंड तनतना रहा था.

उन्होंने अली को दीवाल से टिकाया और उसका मुँह दीवाल की ओर किया, उसके मस्त गोरे गोरे चूतड़ चमक रहे थे.

जीजाजी ने अपने लंड पर थूक मला और अली के चूतड़ एक हाथ से टटोले, गांड उंगली से टटोली और अली की गांड पर अपना लम्बा मोटा मस्त लंड टिकाया, एक धक्का दिया और पेल दिया.

अली चिल्लाया- आ आ आ धीरे धीरे लग रही है !

जीजा जी बोले- चुपचाप खड़ा रह... क्या पहली बार करवा रहा है ? नखरे मत कर, गांड ढीली रख तो लगेगी नहीं !

और उन्होंने बेरहमी से अपना पूरा मस्त लंड अली की कोमल गांड में पेल दिया और लंड अंदर-बाहर... अंदर-बाहर करने लगे. उसे आध घंटे तक मस्ती से चोदते रहे.

जीजा जी गांड उसकी मार रहे थे, फट मेरी रही थी.

उनका मस्त लम्बा मोटा लंड देख कर मैं घबरा गया पर बकरे की माँ आखिर कब तक खैर मनाती... पिलवाना ही पड़ा... मेरी बारी आ ही गई।

एक दिन मैं बाजार जा रहा था कि साईकिल पर अली बख्श बैग लिए जीजाजी साथ चल रहे थे, मुझे देख उतर गए, मैंने पूछा- कहां जा रहे हैं ?

तो बोला- झांसी जा रहे हैं, तुम कहां ?

मैंने कहा- बाजार गया था, घर जा रहा हूँ। चलिए आपको मैं भी बस स्टैण्ड छोड़ दूँ।

तो जीजाजी बोले- आपका घर कहां है ?

मेरा घर पास ही था, असल में मैं एक किराये के घर में रहता था, अली बोला- पास ही है।

तो जीजाजी बोले- चलो देख लें।

मैंने कहा- चलिए।

अली बोला- देर हो जाएगी, बस छूट जाएगी फिर कभी !

पर उन्होंने सुना नहीं, वे मेरे घर आ गए.

मेरे पास दो कमरे थे, मकान मालिक तब बाहर गए थे, कोई फर्नीचर नहीं था, मैंने चटाई बिछाई, उस पर एक कम्बल बिछाया और बैठ गए.

मैं घर आकर पैन्ट उतारने लगा तो अंडरवीयर नीचे खिसक गया, जीजाजी का लंड खड़ा हो गया, उन्होंने मुझे फिर अंडरवीयर नहीं पहनने दिया.

उसी चटाई के ऊपर बिछे कम्बल पर मेरे पास बैठे ही मैंने देखा कि उनका मूसल सा लंड तनतनाने लगा.

उन्होंने मुझे लिटा दिया, औंधा कर दिया, अपनी भी पैन्ट और अंडरवियर उतार कर खूटी पर टांग दिये. अब वे बिल्कुल नंगे मेरे ऊपर शिकारी भूखे जानवर से टूट पड़े, वहीं ताक में एक सरसों के तेल की शीशी रखी थी उसमें से तेल लेकर अपने भंयकर लम्बे मोटे लम्बे लंड पर तबियत से मला और मेरी गांड पर टिका दिया.

जिस लंड को देख कर ही मेरी फट रही थी, वह लंड जब जीजाजी ने मेरी गांड पर ही टिका दिया तो मेरी क्या हालत हुई होगी आप समझ सकते हैं.

लंड टिका कर जीजाजी ने मेरी कमर में हाथ डाला और लताड़ लगाई- क्यों मरा जा रहा है ? घबरा मत गांड ढीली कर, कुछ नहीं होगा. मैं क्या तेरा दुश्मन हूं ? दोस्त हूं, टांगें चौड़ी कर मस्ती से लेटा रह, पहली बार नहीं है, मराई है न ?

और उन्होंने अपना महा भयंकर लंड मेरी कोमल चिकनी गुलाबी गांड पर टिका दिया, फिर मेरे चूतड़ मसलने लगे, फिर एकदम धक्का दिया, सुपारा अंदर था.

मैं चिल्लाया- जीजाजी !

मैं गांड उठाने लगा, भारी दर्द हो रहा था, गांड फटी जा रही थी, पहली बार इतना मोटा लंड मेरी गांड में पिला था.

पर जीजाजी पुराने खिलाड़ी थे, वे पूरा पेल कर ही माने बोले- थोड़ी देर दर्द होगा, फिर मजा आएगा, मैं तुझे परफैक्ट कर दूंगा. इतना माशूक होकर मराने से घबराता है. तेरे जैसे माशूक लौंडे बड़ी किस्मत से मिलते हैं. माशूकी हमेशा नहीं रहती, मैं जब माशूक था, अपनी गांड पर बड़े बड़े लंड झेले ।

वे बातें करते जा रहे थे और लंड पेले थे. करीब पांच मिनट डाले रहे, फिर शुरू हो गए, दे दनादन... दे दनादन... धच्च फच्च... धच्च फच्च !

उनकी कमर बार बार मेरे ऊपर ऊपर नीचे हो रही थी, वे मुझे मस्ती से चोद रहे थे, मेरे मुंह से बार बार आवाज निकल रही थी- आ आ ई ई आ आ... बस बस फट गई ! अब तो बस करें पर वे कुछ सुन नहीं रहे थे, उनके गांड फाड़ झटके पंद्रह बीस मिनट तक चालू रहे, गांड फाड़ कर रख दी.

मैंने पहली बार उस उम्र में अपनी कोमल चिकनी गुलाबी गांड पर इतने बड़े मूसल से लंड के ऐसे जोरदार झटके झेले । गांड को भी पता लगा पहली बार कि चुदाई किसे कहते हैं.

उन्होंने मेरे गाल काट लिए, ओंठ चूस चूस कर लाल कर दिए, मेरे चूचियां तो नहीं थी पर  
उन्होंने उसकी जगह मेरे चूतड़ ऐसे मसले कि कई बार बुरी तरह मसल डाले और लंड  
पेलते समय मुझे ऐसे जकड़ते कि लगता सीने की हड्डियां न चरमरा जाएं.  
उन्होंने केवल गांड की ही चुदाई नहीं की, पूरा बदन ही मसल कर रख दिया, लगा सारा  
शरीर ही चोद डाला ।

